पशुओं में लाल पेशाब रोग (बबेसियोसिस) एवं इसके रोकथाम

डा. अजीत कुमार,
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाघ्यक्ष
परजीवी विज्ञान विभाग,
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

परिचय

बबेसियोसिस एक रक्त परजीवी जनित रोग है, जो पालतू एवं जंगली पशुओं को प्रभावित करते है। यह रोग पूरे विश्व में फैला हुआ है। भारत में इस रोग का प्रकोप सभी राज्यों में है, जिसके कारण संक्रमित पशुओं की दूध एवं मांस उत्पादक क्षमता में कमी तथा समुचित उपचार न होन पर संक्रमित पशु की मृत्यु हो जाती है, जिसके फलस्वरूप पशुपालक को आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है और अन्तोगत्वा देश की पशुधन अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता है ।

रोग का कारण :–

- बबेसियोसिस रोग, गाय, भैंस, भेड़, बकरी, घोड़ा, सूअर, कुत्ता, बिल्ली, बाघ, शेर आदि की लाल रक्त कोशिकाओं में बबेसिया प्रोटोजोआ के मौजूद रहने के कारण होता है। प्रायः बबेसिया प्रोटोजोआ का अलग–अलग प्रजाति विभिन्न पशुओं के प्रजाति में मिलता है ।
- बबेसिया परजीवी का आकार प्रायः नाशपाती के आकार का होता है एवं अधिकतर जोड़ें में पशुओं के लाल रक्त कोशिकाओं में मौजूद रहते हैं ।
- यह रोग सामान्यतः अधिक उम्र के पशुओं में पाया जाता है, क्योंकि कम उम्र के पशुओं में यह रोग माँ के खीस में उपस्थित एंटिबाडी द्धारा रोग–प्रतिरोधक क्षमता ग्रहण कर लेने के कारण नहीं होता है ।
- गाय में इस रोग का प्रकोप भैंस की अपेक्षा अधिक होता हैं ।
- बबेसियोसिस को रेड वाटर, कैटल किलनी ज्वर, लाल पेशाब रोग, टेक्सास फीवर आदि नामों से भी जाना जाता है ।

लाल रक्त कोशिका में मौजूद बबेसिया प्रोटोजोआ जोड़ों में

रोग का प्रसार :–

- इस रोग का फैलाव पशुओं में खून चूसने वाले बूफिलस माइक्रोप्लस नामक किलनी (चमोकन) द्वारा होता है ।
- जब किलनी बबेसिया प्रोटोजोआ से ग्रसित पशु का खून चूसता है, तब यह परजीवी किलनी मे पहुँच जाता है। फिर, इस संक्रमित किलनी के दूसरे अवस्था द्वारा स्वस्थ पशु के खून चूसने के समय यह बबेसिया परजीवी दुसरे पशु के खून में पहुँच जाता है और इस तरह बबेसियोसिस रोग का फैलाव एक पशु से दूसरे पशु में होता है।
- भारत में बुफिलस माइक्रोप्लस किलनी के प्रजाति के द्वारा प्रायः गाय एवं भैंस में बबेसिया परजीवी का प्रसार होता है ।

रोग का प्रसार करनेवाला किलनी

रोग की व्यापिकता :–

- इस रोग का प्रकोप देशी नस्ल के गायों में कम होता है, क्योंकि किलनी का संक्रमण देशी पशुओं में बहुत कम होता है ।
- इस रोग का संक्रमण प्रायः वयस्क पशुओं में होता है ।
- विदेशी और संकर नस्ल के पशु इसके प्रति अति संवेदनशील होते हैं।

किलनी संक्रमित गाय

रोग का लक्षण :–

- इस रोग से ग्रसित पशु में सर्वप्रथम तीव्र बुखार, भूख में कमी, खुन के लाल रक्त कोशिकाआ के टूटने के कारण इसमें उपस्थित हीमोग्लोबिन पशु के मूत्र के साथ बाहर निकलना शुरू हो जाता है और पशु के मूत्र का रंग कॉफी के रंग जैसा लाल हो जाता है। संक्रमित पशु के शरीर में खुन की कमी (एनीमिया) हो जाती है।
- इसके अलावा, रोग–ग्रस्त पशु का कमजोर हो जाना, जुगाली (पागुर) करना बंद कर देना, दुध देने वाले पशु के दुध–उत्पादन में अत्याधिक कमी हो जाना, पतला दस्त आदि लक्षण प्रकट होते हैं ।
- रोग का लक्षण प्रकट होने पर यदि इलाज में देर की गई तो बीमार पशु मृत्यु का शिकार हो जाते है ।
- इस रोग से संक्रमित घोड़ा में बुखार, भूख में कमी, हीमोग्लोबिनयूरिया (मूत्र का रंग कॉफी के रंग जैसा लाल होना), पीलिया (जॉन्डिस), उदासी, एनीमिया, शरीर के निर्भर हिस्सें एवं सिर के त्वचा में जलीय सूजन (इडीमा), पीलापन म्यूकस से ढका कड़ा मल का होना आदि लक्षण देखने को मिलता है ।

बबेसियोसिस रोग से संक्रमित घोड़ा का पेशाव कॉफी के रंग जैसा लाल

कॉफी के रंग जैसा लाल पेशाव

रोग का पहचान :–

- इस रोग का पहचान प्रमुख लक्षणों जैसे– तीव्र बुखार, हीमोग्लोबिन मुत्रता (पेशाब का रंग कॉफी के रंग जैसा लाल हो जाना) के आधार पर कर सकते है।
- संक्रमित पशु के शरीर पर किलनी (चमोकन) की अधिक संख्या भी मिल सकता है ।
- रोग–ग्रस्त पशु के रक्त के आलेप को जिम्सा या लीशमैन से रंगकर सूक्ष्मदर्शी की सहायता से देखने पर प्रायः नाशपाती के आकार का बबेसिया परजीवी प्रायः जोड़े में या अधिक संख्या मे या कभी–कभी अकेले भी लाल रक्त कोशिकाआ में दिखाई पड़ता है । इस जाँच हेतु प्रायः पशु कान के शिरा (वेन) से खून, शरीर का तापक्रम अधिक होने पर अर्थात बुखार के समय स्टेरलाइजड सुई से निकालना चाहिए ।

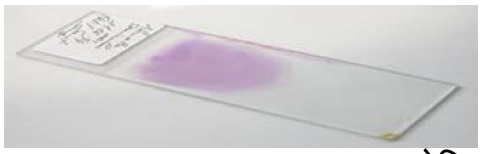

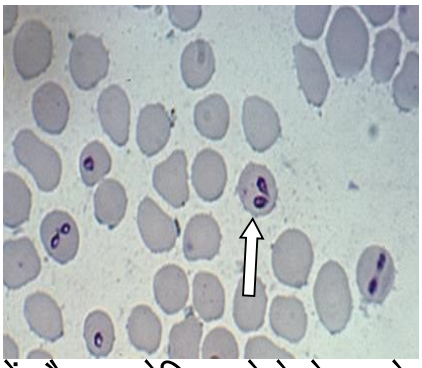

लाल रक्त कोशिका में मौजूद बबेसिया प्रोटोजोआ जोड़ों एवं अकेले

- बबेसियोसिस रोग से मृत पशुओं शव–परीक्षण करने पर लीवर एवं प्लीहा का आकार भी बढा हुआ मिलता है ।

बढा हुआ प्लीहा

बढा हुआ लीवर

रोग का उपचार :–

- बबेसियोसिस रोग का इलाज पशुचिकित्सक के सलाह के अनुसार करना चाहिए। बिना पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर दवा का प्रयोग करना, पशु के लिए जानलेवा हो सकता है ।
  - इसके अलावे लिवर–टॉनिक, रक्तवर्धक औषधि और डेक्सट्रोज सैलाइन का प्रयोग पशुचिकित्सक की सलाह के अनुसार करना चाहिए ।

बबेसियोसिस रोग की रोकथामः–

- रोग की प्रारंभिक चरण में पशु के रोग की पहचान व उचित उपचार करकें ।
- रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें ।
- बबेसियोसिस रोग का कोई कारगर टीका उपलब्ध नही है । अतः इस घातक एवं आर्थिक रूप से हानिकारक रक्त–परजीवी जनित रोग की रोकथाम, किलनी (चमोकन) की संख्या को कम करके किया जा सकता है ।

- पशुपालक को चाहिए कि पशुओं के शरीर पर से चमोकन को हाथ से चुनकर आग में जला दें । इस तरह सप्ताह में एक बार भी करने से पशुओं को चमोकन के प्रकोप से बचाया जा सकता है ।
- पर यदि, पशु के शरीर पर चमोकन इतना ज्यादा हो कि हाथों से चुनना मुश्किल हो तो उस हालत में इस रोग से बचाव के लिए चमोकन के नियंत्रण हेतु कीटनाशक औषधियों साइपरमेथ्रिन/डेल्टामेथ्रिन औषधि का 2 मि.ली. 1 लिटर पानी में घोल बनाकर सुती कपड़ा की सहायता से पशु के शरीर पर बाल के अन्दर मुँह एवं आँख को छोड़कर लगायें एवं साथ–ही–साथ पशुशाला में भी इन कीटनाशक औषधि का समय–समय पर छिड़काव करते रहना चाहिए ।
- यदि चमोकन, इस औषधि से भी कम नही हो तो फ्लूमेथ्रिन नामक कीटनाशक औषधी गर्दन से पूँछ तक गिरायें या आइवरमेक्टिन की सुई पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर त्वचा में लगानी चाहिए ।
- पशुओं के चरने के स्थान यानि चारागाह का समय–समय पर जुताई कर खर–पतवार मे आग लगा देनी चाहिए, इससे किलनी (चमोकन) की अवस्यक अवस्था समाप्त हो जाती है । चमोकन के प्रजनन यानि संख्या को कम करने के लिए पशु आवास के आस–पास गन्दा पानी, घास एवं कुड़ा–करकट को जमा नही होने दें ।
- पशुशाला की दीवार /फर्श पर दरारें नही होनी चाहिए क्योंकि किलनी (चमोकन) या उसकी अवस्थायें इसमें छुपी रहती है । पशुशाला को चूने से रंगाई कराते रहना चाहिए ।
- पशुओं के शल्य चिकित्सा तथा टीकाकरण में दूषित सूई एवं औजारों का उपयोग कदापि नहीं करना चाहिए।
- पशुपालकों को अपने दुधारू पशुओं के खून की जाँच प्रत्येक तीन महीने में कराते रहने से रक्त परजीवी का पता चल जाता है ।

बबेसियोसिस बहुत ही खतरनाक एवं आर्थिक रूप हानिकारक रक्त परजीवी जनित रोग हैं । अतः इस रोग के संक्रमण का कोई भी लक्षण पशु में दिखें तो पशुपालक कों तुरन्त नजदीक के पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर उचित इलाज शुरू कर देना चाहिए । ईलाज में थोड़ी सी देरी या आलस्य से आपको काफी आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ सकता है ।

चित्र : गूगल इमेज के सौजन्य से